अलविदा लता दीदी

सब इस खबर को अपनी निजी क्षति के रूप में देख रहे हैं। 1942 में 13 साल की उम्र में परिवार की कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बीच और पिता से मिली संगीत की संपन्न विरासत के साथ लता ने जो करियर शुरू किया, उसे वह असीमित ऊंचाई तक ले गई।

नवीन पंडित।।

सुर साम्राज्ञी, स्वर कोकिला लता मंगेशकर के निधन की खबर ने स्वाभाविक ही पूरी दुनिया में फैले उनके करोड़ों प्रशंसकों को शोक के सागर में डुबो दिया। सब इस खबर को अपनी निजी क्षति के रूप में देख रहे हैं। 1942 में 13 साल की उम्र में परिवार की कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बीच और पिता से मिली संगीत की संपन्न विरासत के साथ लता ने जो करियर शुरू किया, उसे वह असीमित ऊंचाई तक ले गईं। इस क्रम में न केवल तीन पीढ़ियों ने उनकी आवाज से अपनी आत्मा को सुकून मिलता महसूस किया बल्कि संगीत की वह विरासत भी समृद्ध होती गई, जिसका अभिन्न हिस्सा लता मंगेशकर थीं। जब लता ने फिल्मों में गाना शुरू किया था, तब फिल्मी गायकी को अच्छी नजर से नहीं देखा जाता था। मगर लता की आवाज ने करोड़ों श्रोताओं के दिलों में ऊंचा मुकाम तो हासिल किया ही, इस पेशे को भी इसकी गरिमा दिलाई। 1945 में आई फिल्म महल में आएगा, आने वाला... उनका पहला हिट गाना था। उसके बाद मधुमती, बीस साल बाद, खानदान और जीने की राह फिल्मों के लिए बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर का फिल्मफेयर अवॉर्ड हो या परिचय, कोरा कागज और लेकिन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, उपलब्धियां उनकी झोली में गिरकर जैसे खुद को भाग्यशाली महसूस करने लगीं। बैजू बावरा, मदर इंडिया और मुगले आजम में नौशाद की राग आधारित धुनें हों या पाकीजा, अभिमान, अमर प्रेम, आंधी, सिलसिला, चांदनी, सागर, रुदाली और दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे के सदाबहार गीत– लता मंगेशकर की आवाज जैसे हर सीमा को अप्रासंगिक बनाती चली गई।

मगर इन सबसे बिल्कुल अलग है वह गीत जो भारत चीन युद्ध के बाद 1963 में गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान लता मंगेशकर ने लाइव गाया था, ऐ मेरे वतन के लोगों। देश के आम जनमानस में गहराई से पैठे उस गीत ने लता के गायन, देशभक्ति के जज्बे और शहादत की भावना को जैसे एकाकार कर दिया। साल–दर–साल बीतते चले गए, लेकिन यह गीत राष्ट्र की सामूहिक स्मृति में ऐसे दर्ज है जैसे वह कल की बात हो। गायक एक से एक हुए हैं, होंगे, पर लता जी जैसा कोई न हुआ। यह अकारण नहीं है कि भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्मभूषण और दादा साहेब फाल्के पुरस्कार समेत शायद ही कोई बड़ा पुरस्कार या सम्मान ऐसा हो, जो इस देश और समाज ने लता मंगेशकर को न दिया हो, लेकिन इसके बावजूद आज उनके जाने के बाद यह देश और समाज खुद को उनका ऋणी महसूस कर रहा है। ऐसा लगता है कि जो कुछ उन्हें दिया गया, वह तो कुछ भी नहीं था उसके सामने जो वह हमें और आने वाली पीढ़ियों को सौंप गई हैं। अलविदा लता दीदी।

दार्शनिक तर्क

अशोक वोहरा।

तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में कई शोध हैं जिन्होंने धार्मिक अनुभव के बारे में भौतिक, शारीरिक और वैज्ञानिक प्रमाण खोजने की कोशिश की है। इस बारे में एक संपूर्ण दार्शनिक तर्क देता है कि क्यों दोनों प्रकार के ज्ञान को वैध और मौलिक रूप से जुड़ा हुआ माना जाना चाहिए। संयुक्त राज्य अमेरिका में मिनेसोटा विश्वविद्यालय से जुड़वा बच्चों के अध्ययन से पता चलता है कि चर्च में भाग लेने की प्रवृत्ति या स्वयं के अनुभव के अनुभव की प्रवृत्ति में आनुवंशिक योगदान है। वास्तव में, यह भी कहा गया था कि धार्मिकता की सेवा में मस्तिष्क के तारों का आनुवंशिक निर्धारण होता है। हालाँकि, यह भी गैर–धार्मिक आत्म–पारगमन, स्वयं की विस्मृति या अन्य गैर– धार्मिक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक डोमेन से संबंधित प्रतीत होता है।

संपादकीय

एक्शन का 2022

2022 में हमें जलवायु परिवर्तन, एनर्जी ट्रांजिशन, स्थानीय प्रदूषण के गवर्नेंस पर फोकस करना होगा। प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड सहित पर्यावरण पर काम करने वाली संस्थाओं को भी मजबूत बनाने की जरूरत है। 2022 का अजेंडा गवर्नेंस रिफॉर्म, स्ट्रेंथनिंग एक्शन का अजेंडा होना चाहिए, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव अपने आप तो कम होने वाले नहीं हैं। प्रधानमंत्री ने जो ग्लासगो में अक्षय ऊर्जा का जो ऐलान किया, उसके लिए पैसे भी चाहिए होंगे। इस पैसे को लाने के लिए हमें अब उन इंडस्ट्रीज को प्रोमोट करने की जरूरत है, जो हमारे यहां आकर अक्षय ऊर्जा स्रोत लगाएं। यह पहला काम है। इसका दूसरा फायदा यह होगा कि अक्षय ऊर्जा बढ़ेगी तो कोयला कम होगा। पूर्वी और मध्य भारत में झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, और मध्य प्रदेश इसके बड़े आर्थिक स्रोत हैं। तो कोयला धीरे–धीरे ही कम होगा। मगर उससे इन इलाकों पर क्या आर्थिक प्रभाव पड़ेगा, इस पर भी हमें काम करना होगा। 2022 में जो ट्रांजिशन होने वाला है, उस पर भी चर्चा करने की जरूरत है। यह सब जमीनी स्तर पर होना चाहिए, चाहे वह प्लास्टिक कम करने की बात हो, या कचरा प्रबंधन की। क्योंकि 2021 में हमने देखा है कि बुरा क्या हो सकता है और अच्छा क्या हो सकता है। मेरी यह कामना है कि 2022 में हम अच्छाई पर काम करें, और देश को आगे बढ़ाएं। इस प्रक्रिया में सबसे बड़ा बाधक यही प्रबुद्ध तबका है जो मेरा यह लेख पढ़कर बड़ा सा सर्टिफिकेट जारी करने को आतुर होगा।

जहां तक पर्यावरण की बात है, तो 2021 में काफी गंभीर समस्या हमारे सामने खड़ी हुई पर साल का अंत होते-होते हमें एक सुनहरी लकीर भी दिखी, जिस पर देश, सरकार और उद्योगपति साथ में काम करके आगे बढ़ सकते हैं।

दिल्ली से ग्लासगो

चंद्रभूषण।।

पर्यावरण और स्वास्थ्य के नजरिए से वर्ष 2021 लंबे समय तक याद किया जाएगा। इस साल हमने मानवता का श्रेष्ठ देखा तो सबसे बुरा भी देखा। साल की शुरुआत कोरोना की दूसरी लहर से हुई। हमारे देश का जो स्वास्थ्य ढांचा था, वह चरमरा गया। लोगों को अस्पतालों में बेड नहीं मिल रहे थे, ऑक्सिजन, मेडिकल सप्लाई की कमी थी। लेकिन साल का अंत होते–होते हमने करोड़ों लोगों को वैक्सीन दी। 2021 में जहां लाखों लोग मरे, तो करोड़ों लोगों की जान भी बची, क्योंकि हमने रेकॉर्ड टाइम में वैक्सिनेशन किया। 2021 बताता है कि अगर हम साथ मिलकर तकनीक और विज्ञान का प्रयोग करें तो लोगों की जान बचा सकते हैं, विकास कर सकते हैं।

जहां तक पर्यावरण की बात है, तो 2021 में काफी गंभीर समस्या हमारे सामने खड़ी हुई पर साल का अंत होते–होते हमें एक सुनहरी लकीर भी दिखी, जिस पर देश, सरकार और उद्योगपति साथ में काम करके आगे बढ़ सकते हैं। 2021 में जिस तरह का वायु प्रदूषण हुआ, रेकॉर्ड में वैसा नहीं देखा गया है। 2015 से केंद्रीय प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड ने वायु प्रदूषण की ठीक से मॉनिटरिंग शुरू की। साल 2021 में वायु प्रदूषण का लेवल पिछले पांच–छह साल में सबसे अधिक रहा है।

रेकॉर्ड दिखाता है कि पिछले चार–पांच सालों में सबसे अधिक पराली हरियाणा और पंजाब में जलाई गई। दिवाली के अगले दिन ही लखनऊ, दिल्ली या गाजियाबाद में वायु प्रदूषण चरम पर पहुंचा। इसी दिसंबर में दिल्ली में वायु प्रदूषण बेहद गंभीर हो गया था। ऐसे ही जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखें। इस साल जो अतिवृष्टि हुई, बाढ़ आई, इसका भी रेकॉर्ड बना। नैनीताल में दिन भर में 400 मिलीमीटर की बारिश हुई, बाढ़ आई। चेन्नै तो लगातार डूबा ही हुआ है। साथ ही देश के अलग–अलग हिस्सों में अतिवृष्टि ने हमारे शहरों को रोक दिया। छोटे समय में इतनी अधिक बारिश देखी नहीं गई है। ये साफ दिखाता है कि अतिवृष्टि अभी बढ़ेगी, जिसमें लोगों की मौत बढ़ेगी, आर्थिक दुष्प्रभाव बढ़ेंगे। वहीं इस साल हमने बढ़ती हीट वेव भी खूब देखी।

बात कचरा प्रबंधन की करें तो 2021 में दिखा कि कोविड में जिस तरह से बायो मेडिकल वेस्ट बढ़ा है, उससे हमारे सॉलिड और बायो मेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट का ढांचा भी चरमरा गया है। नदियों से जो प्रदूषण कम करना था, उस काम में भी काफी कमी रही। 2021 में यह साफ हो गया है कि हमारी जो गवर्नेंस है, पर्यावरण से संबंधित विभाग हैं, उनमें काफी कमजोरी है। लेकिन 2021 का अंत होते–होते ग्लासगो क्लाइमेट समिट में प्रधानमंत्री मोदी ने ऐलान किया कि भारत 2070 तक कार्बन डाई ऑक्साइड सहित जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार गैसों का उत्सर्जन शून्य पर लेकर आएगा। यह बहुत बड़ा कमिटमेंट है, पर्यावरण के क्षेत्र की सुनहरी रेखा है। साथ ही भारत ने अगले दस साल के टारगेट का भी ऐलान किया, जिसके तहत हम पचास फीसदी एनर्जी अक्षय ऊर्जा से लेंगे। यानी जो बाकी के ऊर्जा स्रोत हैं, मसलन कोयला, तेल या गैस– उसका इस्तेमाल कम करेंगे। अक्षय ऊर्जा स्रोत, जैसे सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा बढ़ाएंगे।

अब सवाल उठता है कि साल 2022 में क्या हो सकता है? एक चीज तो मानकर चलना चाहिए कि जलवायु परिवर्तन का हमारे देश में प्रभाव बढ़ेगा। इसका हमारी अर्थव्यवस्था, खेती और पानी की सप्लाई पर प्रभाव होगा। हमें अब जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निदान के तरीके पर काम करने की जरूरत है।

सूडोकु नवताल- 5305

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5304 का हल

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

अपना ब्लॉग

एडॉप्टेशन प्लान लागू करने की जरूरत

मोहन। केंद्र का तो पूरा निर्देशन रहेगा, फंडिंग भी। लेकिन अब राज्य सरकारों को स्थानीय स्तर पर एडॉप्टेशन प्लान लागू करने की जरूरत है। मसलन, अगर अतिवृष्टि होने वाली है तो हमें अच्छे चेतावनी सिस्टम लगाने की जरूरत है ताकि क्षति कम हो। हीट वेव के लिए शहरों में 'हीट कोड' बनाने करने की जरूरत है। मतलब, अगर तापमान बहुत तेजी से बढ़े तो लोगों को बता दिया जाए कि वे घर में ही रहें। आउटडोर वर्क कम करके हॉस्पिटल और पानी मुहैया कराया जाए। हमें लोकल गवर्नेंस लेवल पर 2022 से काम करने की जरूरत है। अब तक हमने उस पर बहुत काम नहीं किया है। अब हमें जिला और ब्लॉक लेवल पर काम करना होगा। 2022 में यह काम पूरा नहीं हो पाएगा, लेकिन 2022 में हम शुरुआत कर सकते हैं। त्यागी पर एफआईआर नहीं होना चाहिए? नहीं, मैं इन कार्रवाइयों के पूर्ण समर्थन में हूं, लेकिन मेरी नजर में यह मूल समस्या का समाधान नहीं है। चूंकि यह समस्या का कुछ हद तक ही सही, लेकिन समाधान है तो मैं इसके साथ हूं और उम्मीद करता हूं समस्या की जड़ पर चोट करने की योजना बने और उसे रणनीतिक तौर पर अंजाम दिया जाए।